PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Assam Tribune, Guwahati
Saturday 9th May 2015, Page: 9
Width: 12.67 cms, Height: 16.39 cms, a4, Ref: pmin.2015-05-12.20.13

Seminar on future of Sualkuchi silk industry

CORRESPONDENT

SUALKUCHI, May 8 – A two-day seminar on the future of the *muga* and *pat* industry of Sualkuchi was organised by the Department of Chemistry, Sualkuchi Budram Madhab Satradhikar College here recently.

The national-level seminar was sponsored by the UGC and covered sub-themes ranging from various dimensions of research on *muga* rearing and silk production, modernisation of production mechanism involving improved technologies in *muga* and *pat* industry, emerging threats to the *muga* and *pat* industry and its sustenance, constraints and prospects of the brand promotion for *muga* and silk products of Sualkuchi, a cultural perspective on the *muga* and *pat* industry to the challenges and prospects of the handloom industry in Assam with special reference to Sualkuchi.

Addressing the cultural programme chaired by Umesh Chandra Das, chairman of the governing body of the college, Dr Homeswar Goswami, former HoD, Economics, Dibrugarh University, and HoD, MBA, Assam Downtown University, expressed his dissatisfaction over the diminution of the *muga* silk of Assam. He pointed out that the decline in the *muga* fabric is due to decreased production of *muga* cocoons. The demand of *muga* fabric is two times more than the *muga* fabric production.

The distinguished economist said the *muga* industry is employment-generating. About 30,000 people of the State are engaged in this industry. But the plantation of feeding trees for moths has gradually decreased and as a result, the rearing of *muga* cocoons has also reduced, he said.

Highlighting the different problems of the *muga* industry, Dr Goswami said lack of timely seed supply is the major cause of the reduction in the rearing *muga* cocoons besides pesticides and attacks by moth-eating birds. He stressed that the Government should take necessary steps to build the infrastructure for the optimum harvesting of *muga* cocoons. He also called for the constitution of a research call which would provide ample opportunities to weavers to develop their skills to produced exclusive dress material to cater to foreign markets.

Addressing the inaugural session, Dr Bhabhesh Chandra Goswami, Director, UGC-HRDC, Gauhati University, and HoD, Chemistry, GU, outlined the history and heritage of the *muga* silk industry of Assam. He put emphasis on the introduction of a certificate course on *muga* silk at the Sualkuchi Budram Madhab Satradhikar College to inculcate new ideas in youngsters to develop the *muga* silk industry. Dr Brajen Choudhury also spoke on the occasion.

Earlier, Dr Dipesh Chandra Bhagawati, principal of the college, read out the welcome address, while Umesh Chandra Das lit the ceremonial lamp. The meeting was attended by the scientists from the Central Silk Board and teachers and researchers from different institutions.

The Chemistry department of the college brought out a book of abstracts on the future of the *muga* and *pat* industry in the Sualkuchi area of Assam.

PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Financial Chronicle, Delhi
Tuesday 12th May 2015, Page: 4
Width: 7.70 cms, Height: 2.52 cms, a4, Ref: pmin.2015-05-12.36.32

Siyaram Silk Q4 net up 59.18%

Siyaram Silk Mills on Monday reported 59.18 per cent jump in net profit at Rs 32.14 crore for the fourth quarter ended March 31. The firm had reported a net profit of Rs 20.19 crore a year ago.

PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Nai Dunia, New Delhi
Tuesday 12th May 2015, Page: 7
Width: 20.85 cms, Height: 17.57 cms, a4r, Ref: pmin.2015-05-12.40.78

तंगहाली में मेहंदीवाड़ा के बुनकर

बालाघाट (ब्यूरो, मप्र)। आजादी के बाद समय बदला और उम्मीद की गई कि अब यहां के बुनकरों की स्थिति मजबूत होगी, लेकिन हुआ ठीक उलटा। समय के बदलाव के साथ हथकरघा की जगह बड़ी आधुनिक मशीनों ने ले ली और इसी के साथ शौकीन अब हथकरघा से बुने कपड़े कम पहनने लगे, परंतु आज भी हथकरघा से बुनी साड़ियां बाजारों में आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं। ऐसे ही बालाघाट के मेहंदीवाड़ा की साड़ियां भी चंदेरी के बाजार का मुख्य आकर्षण बनी हुई हैं। मेहंदीवाड़ा की साड़ियां बाजार की खास पसंद चंदेरी के बाजार में चंदेरी की साड़ियों के नाम पर बिकती है। जिले के बुनकर जहां बाजार को तरस रहे हैं। वहीं उन्हें अपनी कारीगरी का पर्याप्त लाभ नहीं मिलने से उनमें असंतोष व्याप्त है।

बाजार की मांग तो पूरी होती जा रही है, लेकिन हथकरघा के सहारे जीवन चलाने वाले हाथ बेकार हो रहे हैं। इन्हीं बेकार हाथों का एक गांव है मेहंदीवाड़ा। बालाघाट के वारासिवनी क्षेत्र में स्थित यह गांव जहां पीढ़ियों से घर पर रहकर काम करने वाले शिल्पियों को पेट की आग बुझाने के लिए पलायन करना इनके लिए एकमात्र विकल्प रह गया है। वहीं मजदूरी की तलाश में ये लोग महानगरों की खाक छान रहे हैं। एक तरफ काम नहीं और दूसरी ओर हताश बुनकर अपना ठौर-ठिकाना तलाशने को पलायन कर रहे हैं। आजादी के बाद से मेहंदीवाड़ा के हथकरघों में लगे सैकड़ों हाथ बेकार होने लगे। इनकी बेरोजगारी का जो सिलसिला आरंभ हुआ वह आज तक जारी है। सरकारी प्रयास इन्हें जिंदा रखने के लिए जरूर हुए, लेकिन कोई सार्थक परिणाम नहीं मिल पाया। बुनकर परिवारों की दुर्दशा का जो दौर शुरू हुआ वह आज तक जारी है। सरकारी योजनाएं तो इन्हें आबाद करने के लिए आती हैं, लेकिन इन तक पहुंचने से पहले ही गुम हो जाती हैं जबकि सरकार द्वारा इन्हें रोजगार देने तथा रोजगार को बढ़ावा देने के लिए अधिकारी गांवों तक तो आते हैं, लेकिन सपने दिखाकर वायदे कर वापस चले जाते हैं।

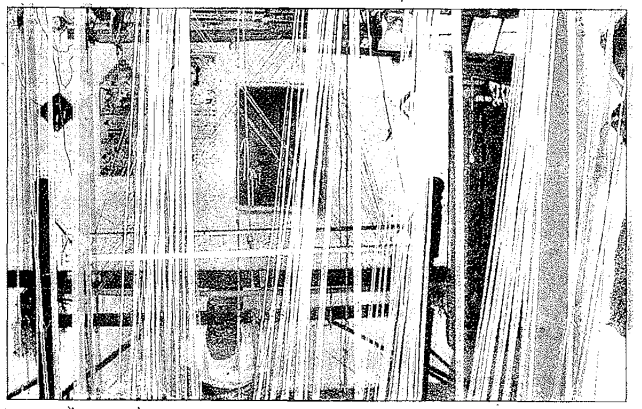

हथकरघा में कपड़ा बुनते बुनकर।

वापस जाकर वादे ही नहीं मेहंदीवाड़ा को ही भूल जाते हैं। हालात मेहंदीवाड़ा में यह हो गए हैं कि जिस गांव में 400 से अधिक बुनकर हथकरघा चलाते थे जो अब 100-150 ही बचे हैं। बुनकरों के बुझे चेहरे सरकारी योजनाओं के लाभ तथा अपनी दुर्दशा की दास्तां बयां कर रहे हैं।

निर्माण सामग्री

जिले में बुनकर रॉ-मटेरियल चंदेरी से बुलवाया जाता है और साड़ियां तैयार कर चंदेरी में ही बेची जाती है। यहां पर कॉटन, कोसा, मलवरी सिल्क, सलवार-सूट के कपड़े इत्यादि तैयार किए जाते हैं। इसमें सिल्क कॉटन की साड़ियां चंदेरी की क्वालिटी की होती है, जो यहां अधिक बनाई जाती हैं।

व्यापार कम

स्थानीय आधार पर बालाघाट जिले में हथकरघा से तैयार किए जाने वाले कपड़े कम बिकते हैं। इनकी लागत अधिक होती है और अधिक महंगे होते हैं। इस वजह से ये कपड़े राजधानी तथा महानगरों में अधिक बिकते हैं। स्थानीय आधार पर इसका व्यापार कम है।

तकनीकी कमी

दुनिया भर में जहां बुनकर अब हाथ से बुनाई कर दो-पांच मीटर की जगह आधुनिक मशीनों से सैकड़ों मीटर कपड़ा तैयार कर रोजगार को बढ़ाकर दोगुना लाभ कमा रहे हैं। इधर तकनीकी कमी के कारण न सिर्फ कुशल कारीगर बेकार बैठे हैं बल्कि जो लोग काम कर रहे वे कम मेहनताना पाकर नाखुश हैं।

बुनकरों के अनुसार दुनिया भर में बालाघाट की कारीगरी मशहूर है, लेकिन आज तक शासन-प्रशासन से उन्हें ऐसी मदद नहीं मिली कि रोजगार को बढ़ाने आधुनिक मशीन जैसे ऑटोलूम आदि प्रदान की गई हों। हथकरघा का सालों से काम कर रहे लोगों के अनुसार इससे वे रोजाना सैकड़ों मीटर कपड़ा तैयार कर आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस संबंध में हथकरघा के असिस्टेंट डायरेक्टर आरके वासल से संपर्क करने का प्रयास किया गया तो संपर्क नहीं हो सका। हालांकि विभागीय सूत्रों का कहना है कि हथकरघा से बुने कपड़े अंतरराष्ट्रीय बाजारों में पहुंचाने तथा इस व्यापार को बढ़ावा देने को शासन स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं।

समिति व समूह

जिले में ग्रामोद्योग विभाग के अंतर्गत हथकरघा के लिए 5 समितियां तथा 10 समूह बनाए गए हैं। जो इस पर कार्य कर रहे हैं जिनके माध्यम से मेंहदीवाड़ा, हट्ठा, बेनी, इरवाघाट, धानीटोला क्षेत्रों में हथकरघा उद्योग की गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। जहां 395 पंजीकृत बुनकर हैं।

अब नहीं बनना चाहते बुनकर

कभी पीढ़ियों से की जा रही कारीगरी के कद्रदान जब बहुत थे, तब लोगों में इसे सीखने का चाव बहुत था, लेकिन महंगाई के इस दौर में तंगहाली से जूझ रहे बुनकर परिवार के लोग अब इस कला को सीखना नहीं चाहते। जिसके चलते पारंपरिक व्यवसाय को छोड़कर बुनकरों की नई पीढ़ी रेडिमेड कपड़ों के व्यवसाय की ओर बढ़ रही है। स्थिति यह कि रेडिमेड कपड़ों के व्यवसाय से बुनकरों की माली हालत तो सुधरी है, लेकिन हथकरघा उद्योग बजाय सवरने के दम तोड़ने लगा है।

PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Amar Ujala, Delhi
Tuesday 12th May 2015, Page: 11
Width: 8.39 cms, Height: 13.13 cms, a4, Ref: pmin.2015-05-12.41.76

टेक्सटाइल का निर्यात लक्ष्य दिख रहा मुश्किल

अमर उजाला ब्यूरो

- चालू वित्त वर्ष में टेक्सटाइल व गारमेंट निर्यात में 10 फीसदी बढ़ोत्तरी का है लक्ष्य

नई दिल्ली। टेक्सटाइल मिलों को पर्याप्त मात्रा में कपास उपलब्ध नहीं होने की वजह से चालू वित्त वर्ष 2015-16 के दौरान गारमेंट व टेक्सटाइल निर्यात के लक्ष्य को पाना संभव नजर नहीं आ रहा है। कॉटन कारपोरेशन ऑफ इंडिया (सीसीआई) की तरफ से बाजार में बिक्री के लिए काफी कम मात्रा में कपास उपलब्ध कराए जाने की वजह से टेक्सटाइल उद्योग को यार्न निर्माण के लिए कपास उलब्ध नहीं हो पा रहा है। चालू वित्त वर्ष में टेक्सटाइल व गारमेंट के निर्यात में10 फीसदी बढ़ोत्तरी का लक्ष्य रखा गया है।

नॉदर्न इंडिया टेक्सटाइल मिल्स एसोसिएशन के चेयरमैन शरद जयपुरिया के मुताबिक कपास की उपलब्धता की जो कमी चल रही है, उसे देखते हुए टेक्सटाइल व गारमेंट के निर्यात लक्ष्य को हासिल नहीं किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि सीसीआई काफी कम मात्रा में बाजार में बिक्री के लिए कपास उपलब्ध करा रहा है।

सीसीआई के पास 86 लाख बेल्स (एक बेल 170 किलोग्राम) कपास का स्टॉक है और अब तक सीसीआई ने मात्र 5.68 लाख बेल्स ही बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध कराया है। जयपुरिया के मुताबिक बाजार में कपास की कमी से इसकी कीमत लगातार बढ़ रही है और ऐसे में निर्यातकों के लिए काफी चुनौतियां होंगी क्योंकि उनकी लागत बढ़ती जाएगी।

उन्होंने कहा कि टेक्सटाइल क्षेत्र रोजगारपरक है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मेक इन इंडिया कार्यक्रम को टेक्सटाइल काफी सफल बना सकता है, लेकिन कच्चे माल की कमी से उत्पादन भी प्रभावित होगा।

PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Deccan Herald, Delhi
Tuesday 12th May 2015, Page: 19
Width: 16.87 cms, Height: 34.93 cms, a3, Ref: pmin.2015-05-12.45.138

Prolific portfolio

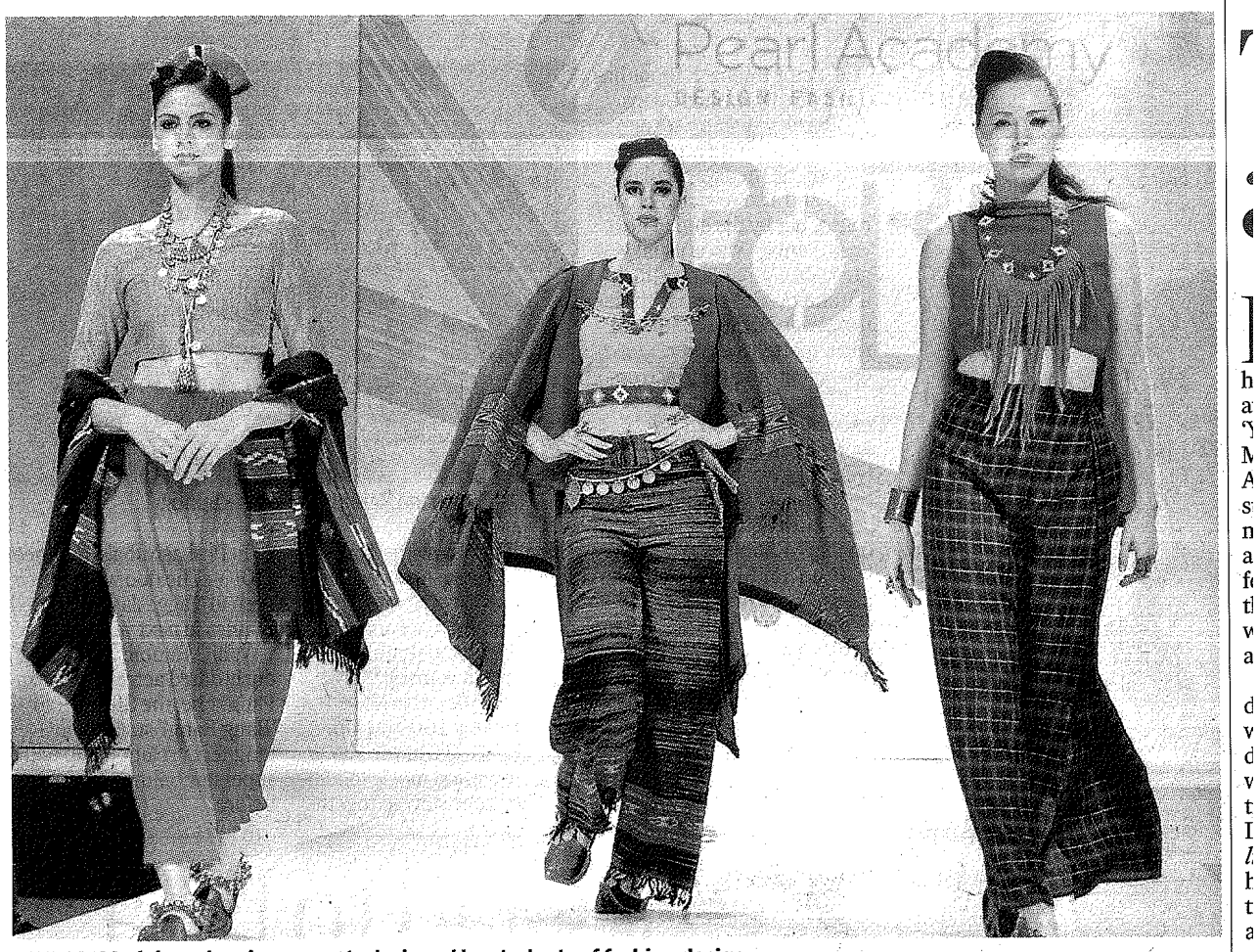

SPUNKY **Models sashay in garments designed by students of fashion design.**

Innovative design in everything

Within seconds of the music being turned on, a few youngsters from the crowd step forward to the centre and start dancing. This flash mob appeared like another attempt by students of Pearl Academy to explore design sensibilities in new realms.

At the three-day event 'Portfolio '15', held recently at NSIC Grounds in Okhla, the graduating students of the institute left no opportunity unexplored to prove their brilliance in designing. From fashion and textile to interior and communication, students from each department exhibited an impressive idea that spoke highly of their artistic sensibilities and talent.

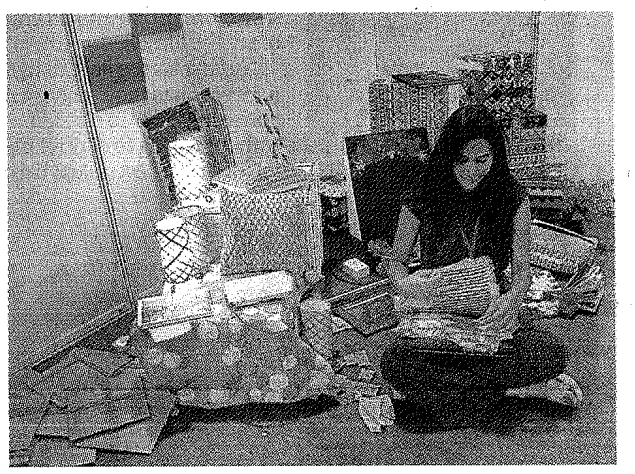

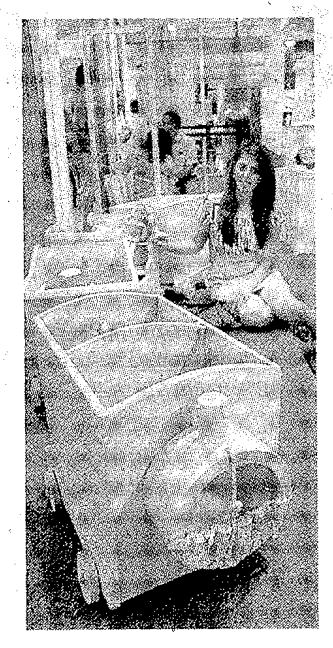

The Foundation Course students experimented with materials to unleash their design creativity. A nuance of this is a cocktail dress made by twisting paper napkins!

While the fashion shows in the evening and an appearance by designer Manish Malhotra took away most of the limelight, certain projects left an imprint on *Metrolife*.

From the Fashion Styling & Image Design department, the students went to the extent of designing and printing a Delhi Style Directory. A student Avani Juneja has focused on the dressing of transgenders while her classmate Niyati Jain shows how convertible garments can be created and worn in different ways.

Amidst the various mannequins on display, one wearing a white dress captured everyone's attention. Nupur Sharma, student of MAFT (MA in Fashion Textile) final year, the creator of garment worn by this mannequin explains, "This is made from nylon powder which is cut with the help of laser printing and left to cool down." The motifs of this dress inspired from Rococo art period of Europe makes it all the more exciting.

From the Textile Design department, Shaifali Khandelwal's theme of Indus Valley Civilisation strikes instantly. As the girl sits cross-legged showing her samples, she informs how she "went to National Museum to research about the motifs in this period". Quite contrary are the sarongs designed by Neelam Singhal, which make use of Adinkra fabrics which are used in Ghana.

In the Fashion and Media Communication department, Avisha Chaudhary has won the award for Most Innovative Project in Digital Future for designing an app for men to understand their fashion needs. Another app, but by a student of School of Communication and Media, named 'Happy Troop' imparts important information about oral hygiene for the young ones. The latter is quite an innovative invention and can be adopted as a learning tool in mainstream education.

Amidst designs that were in each and every artifact at the venue, the pale pink Toy Train designed by Shubhi Mishra from Product Design department drew attention. "I designed this with the aim to teach children to learn how to store their toys," says a humble Mishra as *Metrolife* marvels at the thought process of these budding designers.

Henna Rakheja